Homas
the spiritual way to success
K. Krishna Prasad Bhat
Website: http://homas.in
Email: homasonline@gmail.com
Mobil: 8000858858 /9940406777

॥ श्री शत्रुंजय कुमार त्रिशती ॥

ॐ अस्य श्री शत्रुंजय कुमारत्रिशती महामन्त्रस्य मार्कण्डेय ऋषिः । अनुष्टुप्छन्दः । कुमारषण्मुखो देवता । कुमार इति बीजम् । शाख इति शक्तिः । विशाख इति कीलकम् । नेजमेष इत्यर्गलम् । कार्तिकेय इति कवचम् । षण्मुख इति ध्यानम् ॥

ध्यानम् -

ध्यायेत् षण्मुखमिन्दुकोटिसदृशं रत्नप्रभाशोभितं
बालार्कद्युतिषट्किरीटविलसत् केयूरहारान्वितम् ।
कर्णालम्बितकुण्डलप्रविलसद्गण्डस्थलाशोभितं
काञ्चीकङ्कणकिङ्किणीरवयुतं शृङ्गारसारोदयम् ॥

ध्यायेदीप्सितसिद्धिदं भवसुतं श्रीद्वादशाक्षं गुहं
खेटं कुक्कुटमङ्कुशं च वरदं पाशं धनुश्चक्रकम् ।
वज्रं शक्तिमसिं च शूलमभयं दोर्भिर्धृतं षण्मुखं
देवं चित्रमयूरवाहनगतं चित्राम्बरालङ्कृतम् ॥

नकार स्वरूप सद्योजात मुखं

ॐ नं सौं ईं नं ळं श्रीं शरवणभव हं सद्योजात हां हृदय ब्रह्म सृष्टि कारण सुब्रह्मण्य

1 शिव नाथाय नमः॥

2 निर्लेपाय (निर्लोभाय) नमः॥

3 निर्मयाय नमः॥

4 निष्कलाय नमः॥

5 निर्मोहाय नमः॥

6 निर्मलाय नमः॥

7 निर्विकाराय नमः॥

8 निराभासाय नमः॥

9 निर्विकल्पाय नमः॥

10 नित्यतृप्ताय नमः॥

11 निवृत्तकाय (निरवद्याय) नमः॥

12 निरुपद्रवाय नमः॥

13 निधीशाय नमः॥

14 निर्मय प्रियाय (निर्णय प्रियाय) नमः॥

15 नित्य योगिने नमः॥

16 नित्य शुद्धाय (नित्य सिद्धाय) नमः॥

17 निधीनां पतये नमः॥

18 नित्य नियमाय नमः॥

19 निष्कारणाय नमः॥

20 निस्सङ्गाय नमः॥

21 निधि प्रियाय नमः॥

22 नित्यभृतये (नित्य भूताय) नमः॥

23 नित्य वस्तुने नमः॥

24 नित्यानन्द गुरवे नमः॥

25 नित्य कल्याणाय नमः॥

26 निधात्रे नमः॥

27 निरामयाय नमः॥

28 नित्य योगि साक्षि प्रिय वादाय नमः॥

29 नागेन्द्र सेविताय नमः॥

30 नारदोपदेशकाय नमः॥

31 नग्न रूपाय नमः॥

32 नाना पाप ध्वंसिने नमः॥

33 नाग पीठस्थाय नमः॥

34 नादान्त गुरवे नमः॥

35 नाग सुत गुरवे नमः॥

36 नादसाक्षिणे नमः॥

37 नागपाश हराय नमः॥

38 नागास्त्र धराय नमः॥

39 नटन प्रियाय नमः॥

40 नन्दि ध्वंसिने नमः॥

41 नवरत्न पादुका पादाब्जाय नमः॥

42 नटेश प्रियाय नमः॥

43 नव वैढूर्य हार केयूर कुण्डलाय नमः॥

44 निमिशात्मने नमः॥

45 नित्य बुद्धाय नमः॥

46 नमस्कार प्रियाय नमः॥

47 नाद बिन्दु कला मूर्तये नमः॥

48 नित्य कौमार वीर बाहवे नमः॥

49 नित्यानन्द देशिकाय (नित्य मुक्तोपदेशकाय) नमः॥

50 नकाराद्यन्त संपूर्णाय नमः॥

अनेन नकार स्वरूपार्चनेन सद्योजात मुख श्री सुब्रह्मण्य स्वामि प्रीयतां

मकार स्वरूप वामदेव मुखं

2. ॐ मं सौं ईं नं ळं ह्रीं रवणभवश हीं वामदेव ह्रीं शिरसि विष्णु स्थिति कारण सुब्रह्मण्य

51 महा बलाय नमः॥

52 महोत्साहाय नमः॥

53 महा बुद्धये नमः॥

54 महा बाहवे नमः॥

55 महा मायाय नमः॥

56 महा द्युतये नमः॥

57 महा धनुषे नमः॥

58 महा बाणाय नमः॥

59 महा खेटाय नमः॥

60 महा शूलाय नमः॥

61 महा धनुर्धराय नमः॥

62 महा मयूरारूढाय नमः॥

63 महादेव प्रियात्मजाय नमः॥

64 महासत्वाय नमः॥

65 महा सौम्याय नमः॥

66 महा शक्तये नमः॥

67 महा माया स्वरूपाय नमः॥

68 महानुभावाय नमः॥

69 महा प्रभवे नमः॥

70 महागुरवे नमः॥

71 महा रसाय नमः॥

72 महा रथारूढाय नमः॥

73 महा भागाय नमः॥

74 महा मकुटाय नमः॥

75 महा गुणाय नमः॥

76 मन्दार शेखराय नमः॥

77 महा हारय नमः॥

78 महा मातङ्ग गमनाय नमः॥

79 महा संगीतरसिकाय नमः॥

80 मधु पान प्रियाय नमः (महा शक्तिधराय नमः)॥

81 मधु सूदन प्रियाय नमः॥

82 महा प्रशस्ताय नमः॥

83 महा व्यक्तये नमः॥

84 महावक्त्राय नमः॥

85 महा यशसे नमः॥

86 महा मात्रे नमः॥

87 महा मणि गजारूढाय नमः॥

88 महात्मने नमः॥

89 महा हविषे नमः॥

90 महिमाकाराय नमः॥

91 महा मार्गाय नमः॥

92 मदोन्मत्त भैरव पूजिताय नमः॥

93 महा वल्ली प्रियाय नमः॥

94 मन्दार कुसुम प्रियाय नमः॥

95 मन्दार कुसुम प्रियाय नमः (मदनाकार वल्लभाय नमः)॥

96 मांसाकर्षणाय नमः॥

97 मण्डलत्रय वासिने नमः॥

98 महा भोगाय नमः॥

99 महा सेनान्ये नमः॥

100 मकाराद्यन्त संपूर्णाय नमः॥

अनेन मकार स्वरूपार्चनेन सद्योजात मुख श्री सुब्रह्मण्य स्वामि प्रीयतां

शिकार स्वरूप अघोर मुखं

ॐ शिं सौं ईं नं ळं क्लीं वणभवशर हुं अघोर हूं शिखा रुद्र संहार कारण सुब्रह्मण्य

101 शिवानन्द गुरवे नमः॥
102 शिव सच्चिदानन्द स्वरूपाय नमः॥
103 शिखण्डि मण्डल पूजिताय (वासाय) नमः॥
104 शिव प्रियाय नमः॥
105 शरवणोणोद्भूताय नमः॥
106 शिव शक्ति वदनाय नमः॥
107 शंकर प्रिय सुताय नमः॥
108 शूर पद्मासुर द्वेषिणे नमः॥
109 शूर पद्मासुर हन्त्रे नमः॥
110 शूराङ्ग ध्वंसिने नमः॥
111 शुक्ल रूपाय नमः॥
112 शुद्धायुध धराय नमः॥
113 शुद्ध वीर प्रियाय नमः॥
114 शुद्ध वीर युद्ध प्रियाय नमः॥
115 शुद्ध मानसिक निलयाय नमः॥

116 शून्य षट्क (सङ्ग) वर्जिताय नमः॥
117 शुद्ध तत्व संपूर्णाय नमः॥
118 शङ्ख चक्र कुलिश ध्वज रेखाङ्घ्रि पङ्कजाय नमः॥
119 शुद्ध योगिनि गण धात्रे नमः॥
120 शुद्धाङ्गना पूजिताय नमः॥
121 शोक पर्वत दंष्ट्राय नमः॥
122 शुद्ध रण प्रिय पण्डिताय नमः॥
123 शरभ वेगायुध धराय नमः॥
124 शाकिनी डाकिनी सेवित पादाब्जाय नमः॥
125 शङ्ख पद्म निधि सेविताय नमः॥
126 शत सहस्रायुध धर मूर्तये नमः॥
127 शिव पूजित मानसिक निलयाय नमः॥
128 शिव दीक्षा गुरवे नमः॥
129 शूर वाहनाधिरूढाय नमः॥
130 शोक रोगानिवारकाय नमः॥
131 शुचये नमः॥
132 शुद्धाय नमः॥
133 शुद्ध कीर्तये नमः॥
134 शुचिश्रवसे नमः॥
135 शक्तये नमः॥

136 शत्रु क्रोध विमर्दनाय नमः॥

137 श्वेत प्रभाय नमः॥

138 श्वेत मूर्तये नमः॥

139 श्वेतात्मकाय नमः॥

140 शारण कुलान्तकाय नमः॥

141 शतमूर्तये नमः॥

142 शतायुधाय नमः॥

143 शरीर त्रय नायकाय नमः॥

144 शुभ लक्षणाय नमः॥

145 शुभाशुभ वीक्षणाय नमः॥

146 शुक्ल शोणित मद्यस्थाय नमः॥

147 शुण्डादण्ड फूत्कार सोदराय नमः॥

148 शून्य मार्ग तत्पराय नमः॥

149 शाश्वताय

150 शिकाराद्यन्त संपूर्णाय नमः॥

शिकार स्वरूपार्चनेन अघोर मुख श्री सुब्रह्मण्य स्वामि प्रीयतां

वकार स्वरूप तत्पुरुष मुखं

ॐ वां सौं ईं नं ळं ऐं णभवशरव हें तत्पुरुष हैं कवच महेश्वर तिरोभव कारण सुब्रह्मण्य

151 वल्ली मानस हंसिकाय नमः॥
152 विष्णवे नमः॥
153 विदुषे नमः॥
154 विद्वद् ज्जन प्रियाय नमः॥
155 वेगायुध धराय नमः॥
156 वेग वाहनाय नमः॥
157 वामदेव मुखोत्पन्नाय नमः॥
158 विजयकर्त्रे नमः॥
159 विश्व रूपाय नमः॥
160 विन्ध्य स्कन्दाद्रि नटनाय नमः॥
161 विष्व भेषजाय नमः॥
162 वीर शक्ति मानस निलयाय नमः॥
163 विमलासनोत्कृष्टाय नमः॥
164 वाग्देवी नायकाय नमः॥
165 वौ षडन्त संपूर्णाय नमः॥

166 वाचाम गोचराय नमः॥

167 वासना गन्ध द्रव्य प्रियाय नमः॥

168 वाद बोधकाय नमः॥

169 वाद विद्या गुरवे नमः॥

170 वायु सारथ्य महा रथा रूढाय नमः॥

171 वासुकी सेविताय नमः॥

172 वातुलागम पूजिताय नमः॥

173 विधि बन्धनाय नमः॥

174 विश्वामित्र मख रक्षिताय नमः॥

175 वेदान्त वेद्याय नमः॥

176 वीरागम सेविताय नमः॥

177 वेद चतुष्टय स्तुताय नमः॥

178 वीर प्रमुख सेविताय नमः॥

179 विश्व भोक्त्रे नमः॥

180 विशांपतये नमः॥

181 विश्व योनये नमः॥

182 विशालाक्षाय नमः॥

183 वीर सेविताय नमः॥

184 विक्रमोपरि वेषाय नमः॥

185 वरदाय नमः॥

186 वरप्रदानां श्रेष्ठाय नमः॥

187 वर्धमानाय नमः॥

188 वारिसुताय नमः॥

189 वानप्रस्थ सेविताय नमः॥

190 विष्णु ब्रह्मादि प्रमुख सेविताय नमः॥

191 वीर बाहवादि नव वीर सेविताय नमः॥

192 वीरायुध समावृताय नमः॥

193 वीर शूर विमर्दनाय नमः॥

194 व्यासादि मुनि पूजिताय नमः॥

195 व्याकरणादि शास्त्र नवोत्कृष्टाय नमः॥

196 विश्वतोमुखाय नमः॥

197 वासवादि पूजित पादाब्जाय नमः॥

198 वसिष्ठ हृदयांबोज निलयाय नमः॥

199 वञ्चितार्थ प्रदाय नमः॥

200 वकाराद्यन्त संपूर्णाय नमः॥

वकार स्वरूपार्चनेन तत्पुरुष मुख श्री सुब्रह्मण्य स्वामि प्रीयतां

यकार स्वरूप तत्पुरुष मुखं

ॐ यं सौं ईं नं ळं सौं भवशरवण हों ईशान हौं नेत्रत्रय सदाशिवानुग्रह कारण सुब्रह्मण्य

201 योगी हृत्पद्म वासिने नमः॥
202 याज्ञिक वर्तिने नमः॥
203 यजनादि षट्कर्म तत्पराय नमः॥
204 यजुर्वेद स्तुताय (स्वरूपाय) नमः॥
205 यजुषे नमः॥
206 यज्ञेषाय (यज्ञश्रिये)नमः॥
207 यज्ञ गम्याय (श्रिये) नमः॥
208 यज्ञ राज्ञे (महते) नमः॥
209 यज्ञ पतये नमः॥
210 यज्ञ मयाय (फलप्रदाय) नमः॥
211 यज्ञ भूषणाय नमः॥
212 यज्ञ फलदाय (यमाद्यष्टाङ्ग साधकाय) नमः॥
213 यज्ञाङ्ग भुवे नमः॥
214 यज्ञ भूताय नमः॥
215 यज्ञसंरक्षिणे नमः॥

216 यज्ञ पण्डिताय नमः॥

217 यज्ञ विध्वंसिने नमः॥

218 यज्ञ मेष गर्व हराय नमः॥

219 यजमान स्वरूपाय नमः॥

220 यमाय नमः॥

221 यमधर्म पूजिताय नमः॥

222 यमाद्यष्टाङ्ग साधकाय नमः॥

223 युद्ध गम्भीराय नमः॥

224 युद्ध हरणाय नमः॥

225 युद्ध नाथाय (शत्रु भयङ्कराय) नमः॥

226 युगान्तकृते नमः॥

227 युगावृत्ताय नमः॥

228 युग नाथाय नमः॥

229 युग धर्म प्रवर्तकाय नमः॥

230 युगमाला धराय नमः॥

231 योगिने नमः॥

232 योग वरदाय नमः॥

233 योगिनां वरप्रदाय नमः॥

234 योगीशाय नमः॥

235 योगानन्दाय नमः॥

236 योग भोगाय नमः॥

237 योगाष्टाङ्ग साक्षिणे नमः॥

238 योग मार्ग तत्पर सेविताय नमः॥

239 योगयुक्ताय नमः॥

240 योग पुरुषाय नमः॥

241 योग निधये नमः॥

242 योग विदे नमः॥

243 योग सिद्धिदाय (युग प्रलय साक्षिणे) नमः॥

244 युद्ध शत्रु (शूर) भयङ्कराय (मर्दनाय) नमः॥

245 युद्ध शोक मर्दनाय (योन्या मार्ग तत्पराय) नमः॥

246 यशस्विने नमः॥

247 यशस्कराय नमः॥

248 यन्त्रिणे नमः॥

249 यन्त्र नायकाय नमः॥

250 यकाराद्यन्त संपूर्णाय नमः॥

यकार स्वरूपार्चनेन तत्पुरुष मुख श्री सुब्रह्मण्य स्वामि प्रीयतां

अकारादि क्षकारान्त मातृकाक्षर स्वरूप अधो मुखं

ॐ नमः शिवाय सौं ईं नं ळं श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौं वशरवणभ हं अधो मुख हः अस्त्र परब्रह्म पञ्च कृत्य कारण सुब्रह्मण्य

251 अं अस्त्र शिवास्त्र पाशुपत वैष्णव ब्रह्मास्त्र धृते नमः॥

252 अं आनन्द सुन्दराकाराय नमः॥

253 इं इन्द्राणी माङ्गल्य रक्षिताय नमः॥

254 ईं ईषणत्रय वर्जिताय नमः॥

255 उं उमासुताय नमः॥

256 ऊं ऊर्ध्वरेतस्सुताय (स्तुताय)नमः॥

257 ऋं ऋणत्रय विमोचनाय नमः॥

258 ॠं ऋतंभरात्म ज्योतिषे नमः॥

259 ऌं ऌप्ताचार मनोरमाय नमः॥

260 ॡं ऌतभाव पाश भेदिने (प्रपञ्चनाय) नमः॥

261 एं एणाङ्गद सत्पुत्राय नमः॥

262 ऐं ऐशान पद सन्दायिने नमः॥

263 ओं ओंकारार्थ श्रीमद्गुरवे नमः॥

264 औं औन्नत्य प्रदायकाय नमः॥

265 अं अस्त्र कुक्कुट क्षुरिका वृषभ शुद्धास्त्र धराय नमः॥

266 अः अद्वैत परमानन्द चित्विलास महानिधये नमः॥

267 कं कार्य कारण निर्मुक्ताय नमः॥

268 खं खण्डेन्दुमौळि तनयाय नमः॥

269 गं गद्य पद्य प्रतिज्ञाय नमः॥

270 घं घन गम्भीर भूषणा ढ्याय नमः॥

271 ङं ङ् काराकारक द्वन्द्व सर्वसन्ध्यात्म चिन्मयाय नमः॥

272 चं चिदानन्द महा सिन्धु मध्य रत्न शिखा मणये नमः॥

273 छं छेदिताशेशदैत्यौघाय नमः॥

274 जं जरामरणनिवर्तकाय नमः॥

275 झं झल्लरी वाद्य सुप्रीताय नमः॥

276 ञं ज्ञानोपदेश कर्त्रे नमः॥

277 टं टंन्किताखिल लोकाय नमः॥

278 ठं ठकार मध्य निलयाय नमः॥

279 डं डङ्कनद प्रियाय नमः॥

280 ढं ढाळितासुर कुलान्तकाय (सङ्कुलाय) नमः॥

281 णं णबिन्दु त्रय वन्मध्य बिन्द्वाश्लिष्ट द्विवल्लिकाय (णगम्याय) नमः॥

282 तं तुम्बुरु नारदार्चिताय नमः॥

283 थं स्थूल सूक्ष्म प्रसदर्षकाय नमः॥

284 दं दान्ताय (दण्ड पाणये) नमः॥

285 धं धनुर्बाणनाराचाद्यस्त्र धराय नमः॥

286 नं निष्कण्ठकाय नमः॥

287 पं पिन्डी पाल मुसल खड्ग खेटक धराय नमः॥

288 फं फणी लोक विभूषणाय नमः॥

289 बं बहु दैत्य विनाशकाय नमः॥

290 भं भक्त सालोक सारूप्य सामिप्य सायुज्य दायिने नमः॥

291 मं महा शक्ति शूल गदा परशु पाशांकुश धृते (महापद्मासुर भागधेय ग्रासाय) नमः॥

292 यं यन्त्र मन्त्र तन्त्र भेदिने नमः॥

293 रं रजस्सत्व गुणान्विताय नमः॥

294 लं लोकातीत गुणोपेताय (लंबोदरानुजाय) नमः॥

295 वं विकल्प परिवर्जिताय नमः॥

296 शं शङ्ख चक्र कुलिश ध्वज धराय नमः॥

297 षं षट्चक्रस्थाय नमः॥

298 सं सर्व मन्त्रार्थसर्वज्ञत्व मुख्य बीज स्वरूपाय नमः॥

299 हं हृदयांबोज मध्य विराज व्योम नायकाय नमः॥

300 ळं लोकैक नाथाय (सर्व शत्रु नाशकाय) नमः॥

301 क्षं एक पञ्च दशाक्षर संपूर्णाय नमः॥

अकारादि क्षकारान्त मातृकाक्षर स्वरूपार्चनेन अधो मुख श्री सुब्रह्मण्य स्वामि प्रीयतां